

रिश्तो में मुहब्बत कैसे पैदा करे ?

अर्बयीने उसरा

40 सुन्हरी इस्लामी तालीमात घरों की खुश हाली के लिए



Concept & Preparation

SHAIK ARSHAD BASHEER UMARI MADANI

MBA, Pursuing Ph.D from Switzerland

Founder & Director – AskIslamPedia.com

1. एक दूसरे को सलाम करे। (मुस्लिम:54)
2. उनसे मुलाखात करने जाए। (मुस्लिम:2567)
3. उनके पास बैठने उठने का मामूल बनाये।
(लुख्मान:15)
4. उनसे बात चीत करे। (मुस्लिम:2560)
5. उनके साथ लुत्फ़ व मेहेरबानी से पेश आये। (सुनन तिरमिज़ी:1924, सहीह)

6. एक दूसरे को हदिया व तोहफा दिया करे। (सहीह अल जामे:3004)
7. अगर वो दावत दे तो खुबूल करे। (मुस्लिम:2162)
8. अगर वो मेहमान बन कर आये तो उनकी जियाफत करे। (तिरमिज़ी:2485)
9. उन्हें अपनी दुआओ में याद रखे। (मुस्लिम:2733)
10. बड़े हो तो उनकी इज्जत करे। (सुनन अबू दावूद:4943, सुनन तिरमिज़ी:1920, सहीह)
11. छोटे हो तो उन पर शफख्त करे। (सुनन अबू दावूद:4943, सुनन तिरमिज़ी:1920, सहीह)
12. उनकी खुशी व ग़म में शरीक होना। (सहीह बुखारी:6951)
13. अगर उनको किसी बात में इयानत दरकार हो तो इस काम में उनकी मदद करे। (सहीह बुखारी:6951)
14. एक दूसरे के खैर ख्वाह बने। (सहीह मुस्लिम:55)
15. अगर वो नसीहत तलब करे तो उन्हें नसीहत करे। (सहीह मुस्लिम:2162)
16. एक दूसरे से मशवरा करे। (आले इमरान:159)
17. एक दूसरे की घीबत ना करे। (अल हुजुरात:12)
18. एक दूसरे पर तान ना करे। (अल हमज़ा:1)
19. पीट पीछे बुराईया ना करे। (अल हमज़ा:1)
20. चुधली ना करे। (सहीह मुस्लिम:105)
21. आड़े नाम ना रखे। (हुजुरात:11)
22. ऐब ना निकाले। (सुनन अबू दावूद:4875)

23. एक दूसरे की तकलीफों को दूर करे। (सुनन अबू दावूद:4946, सहीह)
24. एक दूसरे पर रहम खाए। (सुनन तिरमिज़ी:1924, सहीह)
25. दूसरो को तकलीफ देकर मज़े ना उठाये। (सूरा मुतफिफीन इ सबख)
26. ना जायज़ मसाबिखत ना करे। मसाबिखत करके किसी को गिराना बुरी आदत है। इससे ना शुक्री या तह्खीर के जज़्बात पैदा होते है। (सहीह मुस्लिम:2963)
27. नेकियो में सबखत और तनाफुस जायज़ है, जबके उसके आड़ में तकब्बुर, रियाकारी, तह्खीरकार का फरमा ना हो। (अल मुतफिफीन:26)
28. तमा, लालच और हिर्स से बचे। (अल तकासुर:1)
29. ईसार व खुरबानी का जज्बा रखे। (अल हषर:9)
30. अपने से ज्यादा आगे वाले का खयाल रखे। (अल हषर:9)
31. मजाख में भी कीसी को तकलीफ ना दे। (अल हुजुरात:11)
32. नफ़ा बख़्श बनने की कोशिश करे। (सहीह जामे:3289, सहीह)
33. एहतेराम से बात करे, बात करते वख्त सख्त लहजे से बचे। (आले इमरान:159)

34. घैबाना अच्छा जिकर करे। (तिरमिज़ी:2737, सहीह)
35. गुस्से को कण्ट्रोल में रखे। (सहीह बुखारी:6116)
36. इन्तेखाम लेने की आदत से बचे। (सहीह बुखारी:6853)
37. किसी को हखीर ना समझे। (सहीह मुस्लिम:91)
38. अल्लाह के बाद एक दूसरे का भी शुकर अदा करे। (सुनन अबू दावूद:4811, सहीह)
39. अगर बीमार हो तो इयादत के लिए जाए। (तिरमिज़ी:969, सहीह)
40. अगर किसी का इन्तेखाल हो जाए तो जनाजे में शिरकत करे। (मुस्लिम:2162)

❖ सिला रहमी पर नबी ﷺ के इरशादात

- वो शख्स जन्नत में दाखिल नहीं होगा जो सिला रहमी ना करता हो। (सहीह बुखारी:5984, मुस्लिम:2556)
- तुम अपने वो इंसाब सीखो जिन के सबब से तुम सिला रहमी करोगे। क्यों कि सिला रहमी घर वालो में मुहब्बत का सबब है। माल में कसरत का जरिया है और उम्र में ज्यादाती का बाअस है। (सहीह जामे:1051)

- अगर कोई रिश्तेदार तुझ से खता तलखी करे तो तू उससे मेल झोल पैदा करने की कोशिश कर यही असल सिला रहमी है। सिला रहमी ये नहीं के खता ताल्लुख करने वाले के साथ तू भी रूठ कर बिछड जाए। **(सहीह बखारी:5991)**
- जो शख्स किसी दूसरे इंसान पर रहम नहीं करता अल्लाह भी उस पर रहम नहीं करता। **(सहीह बुखारी:7376), सहीह मुस्लिम:2319)**

नोट : इब्ने खाय्मि रहिमहुल्लाह का खौल है :
 "हुखूख की आदायगी में गड़बड़ पैदा करने वाली चार बीमारिया है : किब्र, हसद, घुस्सा, और शहवत। ये बीमारियाँ सारी बुराइयों की जड़ है, इनसे जितना बचेंगे उतनी जिंदगी सुकून से गुजरेगी।

जरीन खौल : आप जहाँ बैठे है वहां से उठने के बाद भी आप की खुशबू बाखी रहे, जैसे के फूलो को उखाड़े जाने के बाद भी खुशबू बाखी रहती है। बुरे आदमी की मिसाल ऐसी है के गन्दगी उखाड़े जाने के बाद भी बदबू आती है। खुशबूदार फूल बने, बदबूदार बनने से बचे।

नोट : इस ब्रोचर में 40 तालीमात **मुस्तनबत** है, **बयीना** अलफ़ाज़ नबवी मुराद नहीं। कम्पोजिंग करने वाले शैख अब्दुल्लाह उमरी साहब और जमा हजरात का जिन्होने इस कार खैर में हिस्सा लिया **तहम** दिल से शुकर गुज़ार है, दुआ गो है, अल्लाह इस ब्रोचर की नशर व इशात में हिस्सा लेने वालो को अज़े अज़ीम अता फरमाए।